मेट देती दवा दर्द तलवार का | By Mueksh Bagda

तोल ज़रा ऐ मेरे साथी मुखड़ा पीछे खोल रे
मिश्री सी बन के कान में तू प्यारे अमृत घोल रे

मेट देती दवा दर्द तलवार का
घाव बोली का फिर भी ना भरता कभी
हाथ की चोट को भूल जाए कोई
बात को चोट को भूल सकता नहीं
मेटि देती दवा.....

पूत अंधे का जब द्रौपदी ने कहा
कौरवों के दिलो में कटारी लगी
सबके होते हुए चीर जब बो हरे
उस सभा में पांचाली बेचारी लगी
लाज राखी थी आकर के घनश्याम ने
पांच पतियों की नारी अभागन बानी
मेटि देती दवा.....

पांच नंदी के संग में गऊ थी खड़ी
मैया गिरिजा ने हंस कर के ताना दिया
श्राप दे डाला गिरजा को गऊ माता ने
क्यों हांसे होंगे तेरे भी पांच पिया
बात सच्ची हुई गिरिजा बन द्रौपदी
पांच पांडव की द्वापर में रानी बनी
मेटि देती दवा.....

बात कड़वी कभी मुख से बोलो नहीं
बात जैसी ना दूजी कोई मार है
रात दिन जिसकी पीड़ा सताती रहे
एक ऐसी दुधारी वो तलवार है
हर्ष कहने के पहले ही तोलो ज़रा
मुख से निकला दोबारा तो आता नहीं
मेटि देती दवा.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a5%87%e0%a4%9f-%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%a4%e0%a5%80-%e0%a4%a6%e0%a4%b5%e0%a4%be-%e0%a4%a6%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%a6-%e0%a4%a4%e0%a4%b2%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a4%be-by-2/